

मारक बनाता मानसून

मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों में सूखे के दर्जन भर से अधिक जिले अतिवृष्टि की चपेट में आएंगे। मानसून बीते तीन महीनों में सामान्य से पांच फीसदी अधिक बरस चुका है। ऐसे में यह घोषणा चिंताजनक है। सिंतंबर में पूरे देश में वर्षा की औसत आंकड़ा लगभग 168 मिलीमीटर होता है, पर इस बार इसके 109 फीसदी बढ़ जाने का अनुमान है। सामान्य परिस्थितियों में मानसून एक सुखद अनुभूति है, लेकिन वर्तमान विषम परिस्थितियों में इसकी अचानक बढ़त भयावह है। जलजमाव, खेतों-किसानों की बर्बादी, भूखलन, फलेस्प फलड, बढ़, दूर्घटनाएं, साथ ही भारी अवसरण उनके बाद और आंचलिक अवृष्टि की लगभग अनिवार्य परिणाम है। प्रधानमंत्री ने इस पर गहरी चिंता जताने हुए कहा है कि इस मानसून सीजन ने देश की कठिन परीक्षा ली है, पर भारत एकजुट होकर इसका सामना करेगा। प्रश्न यह है, कैसे? दशकों से देश इसी तरह ज़बूता आ रहा है, पर संघर्ष के साधन वही पूर्ण हैं। मानसून को रोका नहीं जा सकता। अतिवृष्टि, क्लाउड बर्स्ट या फलेस्प फलड की बहुत पहले सूचना और नियंत्रण संभव नहीं। तो क्या हम इनके दुर्घटनाओं को कम करने के उपलब्ध उपायों को ईमानदारी और तपत्तरा से लागू कर रहे हैं? यदि हां, तो हार बार यह प्राकृतिक आपादा गंभीर रूप में बैठे लौट आती है? और यदि नहीं, तो बचाव के उपयोग कब लागू होंगे?

सभी नागर निगमों को 'स्टॉर्म वॉटर मैनेजमेंट मास्टर प्लान' बनाना था। कब बनेगा? हर मकान और अपार्टमेंट में रुफ़तॉप रेनवॉटर होवेंट्रिंग अनिवार्य करना था। यह कब तक पूरी तरह लागू होगा? स्पार्टि सिटी परियोजना में डेन मैपिंग और उनका डिजिटलीकरण होना था। भूमिगत नालों और जल निकासी प्रणाली को जीआईएस तकनीक पर मैप करना था, ताकि उनका अतिक्रमण रोका जा सके और समय रहेते उनकी मरम्मत हो सके। प्रागति कहां तक पहुंची? नई कॉलेन्यों में भूमिगत जलाशय बनाकर वर्षा जल को संरचित करने, जलजमाव रोकने की योजना सराहनीय थी, पर उसका क्या हुआ? शहरों में नालों पर स्मार्ट सेंसर और इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित निगरानी से खतरे की पूर्व चेतावनी मिलती। इस दिशा में कितना काम हुआ? शहरीकरण और सड़कों के जल से सीमेंट सतह बढ़ जाने से वर्षा जल जमीन में नहीं जाता। ग्रीन बैल्ट, पार्क और छियुक्त सड़कों का विकास आवश्यक है। हमने इस पर कितना ध्यान दिया?

पहले नगरों में तालाब, बावड़ी, पोखर और नहरें हुआ करती थीं, ये सभी जलस्रोत हीं खेली बाढ़-नियंत्रण और भूजल पुनर्भरण के साधन भी थीं। अज उनकी सबसे अधिक आवश्यकता महसूस की जाती है, वे लगभग गायब ही हो गई हैं। उन्हें पिर से नहीं लाया जा सकता, लेकिन विकल्पों पर कितना काम हुआ है? कंप्यूटर मॉडलिंग और डिजिटल हाइड्रोलॉजी तकनीक से जल जमाव का पूर्वानुमान लगाने का काम किस हड्डे कर हो रहा है? यह भी स्पष्ट नहीं है। हम इन साधनों का उपयोग कर तो रहे हैं, सवाल यह है कि क्या यह पर्याप्त है? अतिवृष्टि सालाना समस्या बन चुकी है, जिसके दुर्परिणाम हर वर्ष और भी पीढ़ीदायक होते जा रहे हैं। अब इसका स्थायी समाधान तलाशना जरूरी ही गया है।

प्रसंगवर्ता

देश में बढ़ रहे हैं नोटे लोग

सिंतंबर माह भारत में राष्ट्रीय पोषण माह के रूप में मनाया जाता है और इस वर्ष के 8वें राष्ट्रीय पोषण माह के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 79वें स्वतंत्रता दिवस का संदेश विशेष रूप से प्रासारित हो गया है। लाल किले से प्रधानमंत्री ने राजनीतिक बयानबाजी को दर्किनार करते हुए देश की एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती पर ध्यान केंद्रित किया। भारत में बढ़ती मोटाई की दर। प्रधानमंत्री की चेतावनी महज एक राजनीतिक बयान नहीं है, बल्कि यह कठिन अतिवित्तन तथ्यों पर आधारित है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि बदलती जीवनशैली, उच्च कैलोरी वाले आहार और नियन्त्रित व्यवहार मध्यमें, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसी गंभीर स्थायी बीमारियों को एक खतरनाक लहर पैदा कर रहे हैं। इस चेतावनी की गंभीरता राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के आंकड़ों से स्पष्ट होती है, जिसके अनुसार 24 प्रतिशत भारतीय महिलाएं और 23 प्रतिशत पुरुष अब अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं। ये आंकड़े पिछले सर्वेक्षण की तुलना में काफी बढ़े हुए हैं, जो दिखाता है कि यह समस्या तेज़ से बढ़ रही है और इसका समाधान तक्ताल आवश्यक है।

इस स्वास्थ्य संकट की व्यापकता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि यह वृद्धि के बावजूद लेती है तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण मोटापे की दरें भी अब शहरी आंकड़ों के बराबर पहुंच रही हैं। यह दर्शाता है कि उच्च कैलोरी आहार और कम शारीरिक गतिविधि की समस्या पूरे देश में फैल गई है, जिससे भारत की पारंपरिक स्वस्थ जीवनशैली स्वरूप में पड़ गई है।

इस चिंताजनक स्थिति को और भी गंभीर बनाते हुए, एस के विभिन्न अध्ययनों में स्कूली बच्चों में 5 से 14 प्रतिशत तक मोटापा देखा गया है, जो भविष्य के लिए एक गंभीर चेतावनी है और दिखाता है कि यह समस्या अगली पीढ़ी में और भी गंभीर रूप ले सकती है। प्रधानमंत्री ने एक अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है। घरेलू खाना पकाने के तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती। यह सुझाव इसलिए वैज्ञानिक रूप से सही है, क्योंकि यह प्राभावित कर रही है। एस के विभिन्न अध्ययनों में स्कूली बच्चों में उच्च रूप विप्राप्ति दरों तेल की खपत में उच्च रूप विप्राप्ति दरों तेल की खपत से अधिक है।

सर्वेक्षण-5 के आंकड़ों से स्पष्ट होती है, जिसके अनुसार 24 प्रतिशत भारतीय महिलाएं और 23 प्रतिशत पुरुष अब अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं। ये आंकड़े पिछले सर्वेक्षण की तुलना में काफी बढ़े हुए हैं, जो दिखाता है कि यह समस्या तेज़ से बढ़ रही है और इसका समाधान तक्ताल आवश्यक है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रीयां प्रतिशत की अत्यन्त व्यावहारिक और मापाने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलता करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प

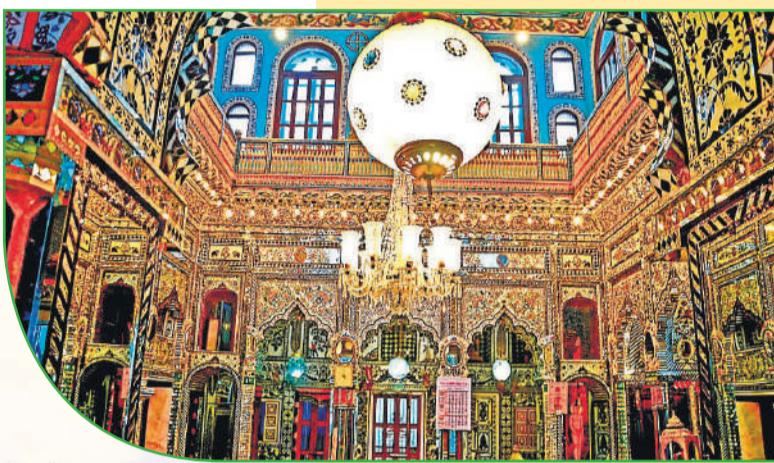


बेजोड़ कारीगरी की नायाब धरोहर कांच का मंदिर

का

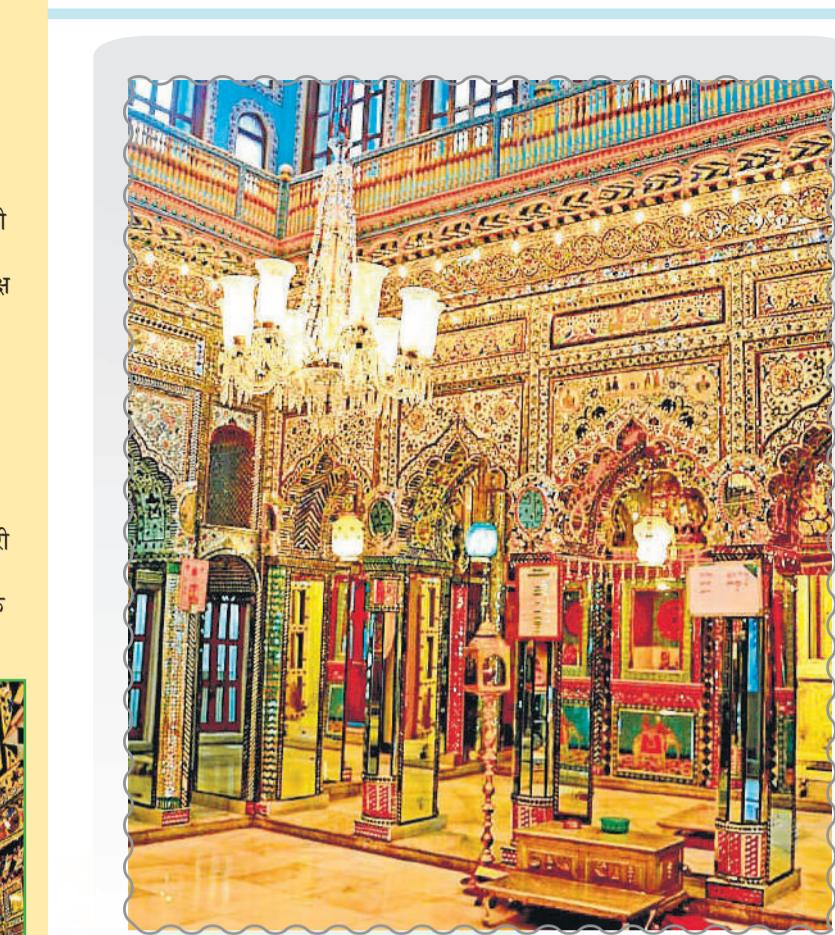
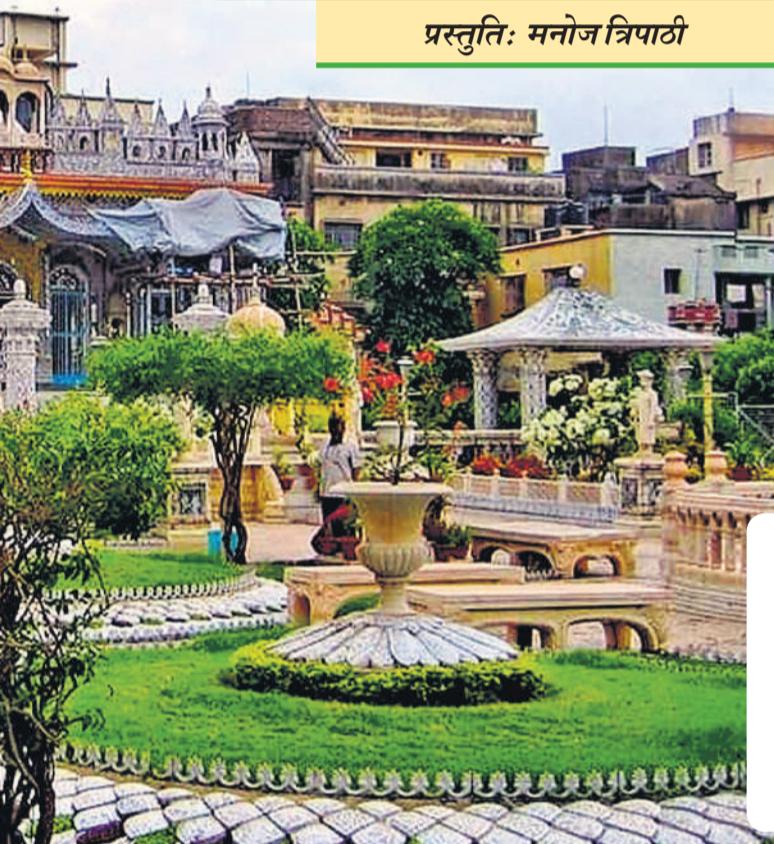
नपुर के कमला टावर क्षेत्र में माहेश्वरी मोहाल में स्थित कांच का मंदिर स्थानीय के साथ बाहरी पर्यटकों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र है। श्री धर्मनाथ स्वामी जैन श्वेतांबर मंदिर के नाम से जाना और पहचाना जाने वाला यह दर्शनीय स्थल 155 वर्ष पुराना होने के साथ जैन धर्म का प्रमुख केंद्र है।

कांच से बने इस मंदिर को जो भी देखता है, मुहँध सा रह जाता है। इस मंदिर में 15 वें तीर्थकर धर्मनाथ स्वामी और सातवें तीर्थकर सुपार्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं स्थापित हैं। इस मंदिर को कानपुर की ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक धरोहर का दर्जा प्राप्त है।



कांच की दीवारों पर राजस्थानी और ईरानी शैली की अद्भुत कला

जैन कांच मंदिर वास्तुकला और स्थापत्य कला का इतिहास बयान करता है। पूरा मंदिर कांच से बना है। इसे आगरा से आए कारीगरों ने तैयार किया था। कांच की दीवारों पर राजस्थानी और ईरानी शैली की अद्भुत कला का संगम दिखाई देता है। दीवारों पर बिहार के समेद शिखर (जहां 20 तीर्थकर को मोक्ष प्राप्त हुआ) की कलाकृति को आकर्षक तरीके से उकेरा गया है। मंदिर का फर्श सफेद संगमरमर से बना है। वास्तु और शिल्प का नायाब उदाहरण यह मंदिर शानिवूर्ण बालाकरण में कांच के जटिल काम और रंगीन चित्रों को प्रदर्शित करता है। कांच के टुकड़ों को तराश कर की गई मनमोहक चित्रकारी देखने वाली है। इसे श्री धर्मनाथ भगवान का कांच देखने वाली है। कांच और मीनाकारी की रंगविरासी कला का यह अद्भुत नमूना हर किसी के लिए दर्शनीय है। दीवारों पर तीर्थ स्थलों, योग के आसनों आदि का चित्रण किया गया है।



कांच व मीनाकारी से अलंकृत आभूषणों से की गई है सजावट

इस मंदिर का निर्माण प्राचीन और पारंपरिक संरचनात्मक शैली में किया गया है। मंदिर की दीवारों पर कांच और मीनाकारी से शानदार ढंग से अलंकृत व जटिल पैटर्न वाले आभूषण जड़े हुए हैं। मंदिर की पूरी संरचना कांच और मीनाकारी से निर्मित है, जो पारंपरिक स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर की दीवारों और छत उत्कृष्ट कलात्मक डिजाइनों में काटे गए दर्पणों से सुसज्जित हैं। दीवारों पर चित्र रंगीन कांच से बने हैं। मंदिर में अलंकृत दर्पण कार्य के साथ भव्य शैली के महारब हैं।



मंदिर प्रांगण में स्थित खूबसूरत बगीचा, संगमरमर की कृतियां

जैन कांच मंदिर जैन धर्मवलंबियों के लिए समर्पित है। इस मंदिर को देखने और दर्शन करने भगवान महावीर के अनुयायी बड़ी संख्या में आते हैं। मंदिर के सामने जहां एक धर्मसाला है, वही मंदिर के प्रांगण में खूबसूरत बगीचा पूरे स्थल को रमणीक बनाता है। बगीचा में संगमरमर को तराश कर कई कलाकृतियां स्थापित की गई हैं।

सुरमा बरेली वाला आंखों का है रखवाला

बरेली में सुरमा बनाने से हाशमी परिवार ने की थी 'बरेली का सुरमा' किसी पहचान का मोहताज नहीं है। यह इस शहर का रिवाज और संस्कृति जैसा है, इसके चलते जो कोई बरेली आया, सुरमा साथ लेकर जरूर गया। यहां हाशमी परिवार से शुरु हुआ सुरमा बनाने का कारोबार अब पांचवीं पीढ़ी संभाल रही है। बरेली में सुरमा लोगों को रेलवे स्टेशनों से लेकर बस अड्डों, बाजारों, गली-मोहल्लों की दुकानों तक पर आसानी से मिल जाता है। बड़ा बाजार, किला रोड, कुतुबखाना, पुराना शहर, सेटलाइट हट कहीं सुरमा बिकता है। आला हजरत के उर्स में आने वाले देश-विदेश के जायरी भी बरेली की निशानी के तौर पर सुरमा खरीदकर ले जाते हैं। -
आसिफ अंसारी, बरेली



सुरमे का कारोबार

बरेली के सुरमा को बांड बनाने वाले एम हीन हाशमी का चार साल पहले निधन हो चुका है। एम हीन हाशमी बरेली में सुरमा कारोबार को आगे बढ़ाने वाले हाशमी परिवार की चांची पीढ़ी के सदस्य थे। उन्होंने 1971 में कारोबार संभालने के बाद इसे देश-विदेश तक शोहरत दिलाई। अब उनके बेटे हाजी शावजे हाशमी सुरमा का काम संभाल रहे हैं। बड़ा बाजार में सुरमा बेचने वाले व्यापारी मोहम्मद शमा हाशमी ने बताया कि सुरमा लगाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है और सफाई भी हो जाती है। उनके पास दिल्ली, मुंबई, बैंगलुरु समेत देश के कई हिस्सों से सुरमा की मांग आती है।



फणीश्वर नाथ रेणु की एक कहानी है। इस आंचलिक कहानी का नाम है पंचलाइट। इसका समय-काल पुराना है। उन दिनों का जब गैसबत्ती या पंचलाइट को रात में रोशनी के लिए जलाया जाता था। उसे जलाना भी कमाल था। इसी को आधार बनाकर रेणु ने एक प्रेम कथा की रचना की है। उन्होंने की एक कहानी है तीसरी कसम। इन दोनों रचनाओं को मिलाकर एक नाटक रचा गया। नाम है मीता पंचलैट। अस्तित्व फाउंडेशन, डामा ड्राइप आउट्स और वैमाइन सिटी मॉल ने बरेली नाट्य महोत्सव के तहत प्रभावी आडिटोरियम, अर्बन हाट, बरेली में मंचन किया। नाटक में फणीश्वर नाथ रेणु जी की दो कहानियों पंचलाइट और तीसरी कसम को मिलाकर एक नया सिंबोलिक खोजकर नाटक को गढ़ा गया। इसमें पंचलाइट जो समस्या है वह तो है ही। साथ ही उसमें गोधन और मुनरी की प्रेम

मीता! पंचलैट वाले: गोधन और मुनरी की प्रेमकथा

असमानता, विपन्नता और कमतर होने से उपजे एहसास को कम करने का सफल प्रयास जब अपने चरम पर जाता है तब उपजती है कहानी 'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखी गई कालजयी कहानी को नई नजर से मंच पर लाने का प्रयास निर्देशक लव टोमर और उनकी टीम ने किया है। नाटक का नाम- "मीता! पंचलैट वाले"। तीसरी

कसम कहानी से महुआ घटवारन का प्रसंग भी कथा का हिस्सा है। यह अपने होने का सिंबोलिज्म गोधन और मुनरी की प्रेमकथा में खोजता है, लेकिन सफल प्रेम के संदर्भ में। रचनात्मक स्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए नाटक में कुछ घटनाएं, चारित्र और भावों का प्रयोग किया गया है, जो मूल कहानियों का हिस्सा नहीं है। - फीवर डेरेक बरेली

कहानी को भी स्थापित किया है। नाटक के मंचन में एक समय पंचलाइट का अभाव और प्रेम कहानी एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी तीसरी कसम की महुआ घटवारन का प्रसंग भी जोड़ा गया। गोधन और मुनरी की प्रेम कहानी दोहराई गई है। यहे लाल कहानी चल रही होती है पंचलाइट के अधार की। गोंध व टोले वालों की इज्जत बच जाती है। नाटक के अनुसार गोधन गांव में रहता है, लेकिन गोधन को पंचायत से बाहर रखा और अंत में वही आगे पंचलाइट जलाता है। नाटक में गोधन को शहर भेज दिया जाता है। जहां वह अच्छे से अपना व्यापार जमा लेता है। फिर वहां से साल-डेढ़ साल बाद आकर गोधन गांव के मेले में ही पंचलाइट की दुकान खोलता है, जो कि गांव व मेले की सबसे बड़ी पंचलाइट की दुकान होती है।



पंचलाइट की आंचलिक कहानी

पंचलाइट रेणु जी की आंचलिक कहानी है। कहानी में बिहार के एक पेड़े में पंचलाइट खरीदा, जिसको गांव वाले पंचलाइट कहकर पुकारते थे। पंचलाइट खरीदने के बाद दस लाख रुपये वाली गांव की गोधन का इक्का पानी बहार कर रखा था, याकि वह सलीमा का गाना गलियों में गाता रहता था और लड़कियों को छेड़ा रहता था। मुनरी गोधन पंचलाइट देखने के लिए आ गए, लेकिन प्रश्न उठा कि इसको जलाया कौन? क्योंकि खरीदने के पहले यह बात जोना जानता है। पंचलाइट देखने के लिए यह नियम लिया कि उसे दुर्घटना जानता है, लेकिन उसी लोग सोच में पड़ गए कि गोधन की सामग्री भी खरीदी गई। उसी में कोई रुपया नहीं लोगी थी। पंचलाइट देखने के लिए आप ही बुलाया जाए। अंत में गोधन की जो खरीदी थी, उसे बुलाया जाए। उस दिन उसे छोड़ा गया। गोधन ने पंचलाइट में तो भाग भरा और पूछा रिपट कहा है, सभी लोग उदास हो गए लेकिन गोधन होशियारी से गाड़ी की सहायता से पंचलाइट जला देता है। पंचलाइट के जलने से लोगों के मन में प्रसन्नता आ गई। मुनरी ने हसरत की निगाहों से उसे देखा दोनों की जनरे बाहर हो गई। मुलाया काकी ने शाम को उसे खाने पर बुलाया पंच भी अति उत्सहित होकर गोधन को कह देते हैं - 'तुम्हारा सात खून माफ, खूब गायों सलीमा का गाना'।



